क्या, क्यों और कैसे?



हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरिः ॥

क्या, क्यों और कैसे ?

[७८ विषयोंपर १२०१ प्रश्नोंके पूज्य भाईजी
श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार द्वारा दिये गये उत्तर]



हनुमानप्रसाद पोद्दार

विषय सूची

विषय | कर्मराज्य | पृष्ठ संख्या

वर्णानुक्रमसे विषय सूची

क्या, क्यों और कैसे?

सुख-शान्ति कैसे मिले?

१. प्रश्न- सुख और शान्ति प्राप्त करनेका अचूक उपाय क्या है?

उत्तर- शान्ति और सुख अनुकूलतामें हैं और अनुकूलता मनमें है, परिस्थितिमें नहीं। अतः जगत्‌की प्रत्येक परिस्थितिमें अनुकूलताकी भावना करके सुखी हुआ जा सकता है।

२. प्रश्न- हम सब नित्य और पूर्ण सुख चाहते हैं--ऐसा क्यों?

उत्तर- पूर्ण, नित्य-सुख परमात्माका स्वरूप है। जीवकी यह सुख-स्पृहा--उसकी परमात्म-मिलनाकांक्षाको प्रकट करती है।

३. प्रश्न- आप कहते हैं पूर्ण और नित्य सुख परमात्माका स्वरूप है। तब क्या सभी जीव परमात्माको चाहते हैं?

उत्तर- जीव स्वभावतः चाहता है परमात्माको ही; क्योंकि सुखकी चाह सबको है। जबतक उसे अपने चरम लक्ष्यकी प्राप्ति नहीं हो जायेगी, तबतक इस प्रवाहकी गतिका कभी विराम नहीं होगा।

४. प्रश्न- सर्वोत्तम सुख क्या है और वह कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर- प्रभुकी स्मृतिके समान सुख अन्य किसी भी वस्तु या स्थितिमें नहीं है। परन्तु यह सुख उन्हींको प्राप्त होता है जिनका प्रभुके पावन पदारविन्दमें प्रेम होता है।

एकमात्र प्रभुके स्वरूपगत है अतिशय सुख नित्य अनन्त।
सुख इच्छित यदि हो तो, मन अनन्य से भजिये श्रीभगवन्त॥

५. प्रश्न- संसारमें भोगोंसे सुख मिलता है तब उन्हें क्यों छोड़ें?

उत्तर- सभी जानते हैं कि संसारकी प्रत्येक वस्तु विनाशशील है। जिस वस्तुकी प्राप्ति और भोगके समय सुख होता है उसके वियोगमें दुःख अवश्य होगा। इसलिये संसारकी प्रत्येक वस्तु विनाशशील होनेके कारण दुःखप्रद है।

६. प्रश्न- क्या आप कहते हैं कि भोगोंसे सुख नहीं मिल सकता?

उत्तर- चाहे कोई स्वीकार करे या न करे, भोगोंसे सुख मिल नहीं सकता। भले थोड़ी देरके लिये कोई उसे भूलसे सुख मान ले।

७. प्रश्न- क्या विपुल सम्पत्ति हमें सुखी नहीं बना सकती?

उत्तर- जिनके पास विपुल सम्पत्ति है, भोगकी विविध सामग्रियाँ जिन्हें सुलभ हैं, वे सुखी नहीं हैं। सुखी वे हैं, जो आनन्दमय भगवान्‌के अधिष्ठानपर अपनेको सुखी मानते हैं।

८. प्रश्न- वास्तवमें सुखी कौन है?

उत्तर- जो पुरुष भगवान्‌का होकर कामना और अपेक्षाके फंदेसे निकल गया है तथा जिसका मन प्रत्येक परिस्थितिमें संतुष्ट है, वही परम सुखी है।

९. प्रश्न- सदा प्रसन्न कैसे रहें?

उत्तर- सदा प्रसन्न रहनेका यही तरीका है कि हम फल भगवान्‌पर छोड़ दें तथा प्रत्येक फलकी मंगलमयतामें अटल विश्वास रखें।

१०. प्रश्न- त्यागसे भी शान्ति मिलती है क्या?

उत्तर- त्यागकी कसौटी ही शान्ति है। वस्तुका त्याग करके मनमें उनके प्रति आसक्ति, मोह और महत्त्व बना रहता है तो शान्ति नहीं होती। त्यागके अनन्तर यदि शान्ति नहीं मिलती है तो गहराईसे देखिये त्यागमें कोई त्रुटि है।

११. प्रश्न- प्रतिकूल वातावरणमें शान्ति कैसे मिले?

उत्तर- यदि मनुष्य प्रयत्न करे तो अपने इच्छानुसार वातावरणका निर्माण कर सकता है। यदि मनुष्य चेष्टा करके अपनी वृत्तियोंको आनन्द और शान्तिसे भर सके तो कैसा भी प्रतिकूल वातावरण उसे आनन्द और शान्तिसे पूर्ण ही अनुभवमें आयेगा।

१२. प्रश्न- प्रायः सभी दुःखी और अशान्त ही मिलते हैं तब शान्तिके लिये क्या करें?

उत्तर- जगतमें छोटे-बड़े, प्रसिद्ध, अप्रसिद्ध प्राय: सभी दु:खी हैं, सभीका जीवन अशान्त है। भजनमें ही सुख-शान्ति मिलती है।

१३. प्रश्न- संसारमें रहते हुए शान्तिका अनुभव कैसे करें?

उत्तर- भगवान्‌से रहित जगतमें तो गड्ढे ही गड्ढे हैं, खाई ही खाई है। इसमें तो परमात्माका आश्रय, भगवद्‌भावका निश्चय, सर्वत्र एकमात्र भगवत् सत्ताका अनुभव और भगवान्‌की लीलाका दर्शन करनेपर ही शान्ति मिलती है। फिर प्रत्येक गड्ढा एक सुन्दर सुरम्य आनन्दस्थलीके रूपमें परिणत हो जाता है।

१४. प्रश्न- निश्चिन्त कैसे रहा जाय?

उत्तर- दयाधन, दयानिधि, शरण्य, सबके आधार और सबके माता-पिता एकमात्र भगवान् ही हैं, उन्हींका आश्रय ग्रहण करना चाहिये। मनुष्य जितना उनपर निर्भर करता है, अपनी इच्छाओंको जिस अनुपातमें उनकी कृपाके प्रति समर्पण कर देता है, उसी अनुपातमें वह निर्भय, निश्चिन्त और सुखी हो जाता है।

१५. प्रश्न- कहा जाता है कि संसारके किसी भी प्राणी, पदार्थ, परिस्थितिमें सुख-शान्ति नहीं है तो हमें अपनी इच्छा पूरी होनेपर सुखका अनुभव क्यों होता है?

उत्तर- किसी काम्य वस्तुके प्राप्त होनेपर एक बार चित्तकी वृत्ति कुछ स्थिर होती है, तब उसमें आत्माकी सहज शान्तिकी छाया आती है। हम उसीको भूलसे उन प्राणी-पदार्थोंसे मिली मान लेते हैं।

१६. प्रश्न- आनन्द कैसे मिले?

उत्तर- जिसका सिर आनन्दके साथ भगवान्‌की इच्छाके सामने झुका है वह आनन्द प्राप्त करता है।

१७. प्रश्न- हर समय आनन्द रहे--क्या इसका कोई उपाय है?

उत्तर- उपाय है निरन्तर आनन्दका विचार, आनन्दका ध्यान। 'नित्य-आनन्द' पर जो अज्ञानका पर्दा पड़ा है, उसे ज्ञानरूपी तलवारसे काट डालना चाहिये। वह तो प्राप्त है ही। प्राप्तिमें जो अप्राप्तिका भ्रम है- सत्संग, वैराग्य, विचार, ध्यान और अटूट श्रद्धा उस भ्रमको मिटा देता है।

१८. प्रश्न- क्या संसारमें दुराचार, भ्रष्टाचार, पाप-ताप दूर होंगे? कभी सच्चे सुखकी प्राप्ति होगी?

उत्तर- हाँ और इसका उपाय है जीवनका आरम्भसे अन्त सब संयमसे हो। बीजारोपण, पालनपोषण, ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा-दीक्षा, धन-वैभव और पद अधिकार सभी संयमसे हो।

१९. प्रश्न- क्या कोई ऐसा उपाय भी है जिससे शान्ति हर समय बनी रहे ?

उत्तर- शान्ति कहीं बाहरसे नहीं आती। या तो कामना-स्पृहा, अहंता-ममता, आसक्ति-अभिमानके नष्ट होनेपर शान्ति मिलती है या भगवान्‌के प्रत्येक विधानकी निश्चित मंगलमयतापर विश्वास होनेपर।

२०. प्रश्न- प्रत्येक परिस्थितिमें संतुष्ट कैसे रहें ?

उत्तर- मनुष्य प्रत्येक परिस्थितिमें संतुष्ट रह सकता है--तृष्णाजनित अभाव-आवश्यकताकी अग्निके बुझ जानेपर तथा परम सुहृद भगवान्‌के मंगलमय विधानपर विश्वास करनेपर।

२१. प्रश्न- भूतकालका भय और भविष्यकी चिन्ता कैसे मिटे ?

उत्तर- वर्तमानको सुधार लें तो भविष्य अपने आप सुधरेगा और भूतकालका भय भी मिट जायगा।

२२. प्रश्न- कहा जाता है कि शान्ति-सुखके लिये शुद्ध कामना, शुद्ध क्रिया, शुद्ध विचार, शुद्ध इच्छा आदि आवश्यक हैं। यह शुद्ध क्या है ?

उत्तर- शुद्ध वही है, जिसको अपनानेसे मन-इन्द्रियोंपर विजय प्राप्त हो, प्राणिमात्रपर दया हो, मन-तन-वचनसे किसीकी हिंसा न हो, चोरी-ठगी न हो, दूसरेके हकपर मन न चले, भगवान्‌में मन लगे, भगवच्चरणोंमें राग हो, भोगोंमें वैराग्य हो और सबमें भगवान् समझकर सबको सुख पहुँचाने, सबकी सेवा करने तथा सबका हित करनेकी प्रवृत्ति एवं उत्साह हो।

अगर चाहते परम शान्ति, तो अहंकारका कर दो त्याग।
ममता और कामना छोड़ो, तनिक न रखो भोगमें राग॥
अथवा प्रभु जो सर्वशक्तिधर, सर्वेश्वर, सर्वज्ञ सुजान।
उनकी सहज सुहृदयतापर रक्खो अखण्ड विश्वास महान॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १३०५)

अशान्ति दुःख कैसे मिटे ?

२३. प्रश्न- जीवनमें अशान्ति दुःख कैसे मिटे ?

उत्तर- इस जगत्का प्रत्येक विषय विनाशकारी है। लेकिन इस विनाश और ध्वंसमें भी आनन्द भरा है। जितना कुछ दुःख या क्लेश है, सब खण्ड या सीमितमें ही है। सृष्टि और संहारकी धारामें जो एक अखण्ड, असीम, दिव्य आनन्दधारा नित्य प्रवाहित है, उसकी ओर देखनेपर न शोक है, न दुःख है और न अशान्ति है।

२४. प्रश्न- अशान्ति दुःखका कारण क्या है ?

उत्तर- जगत्के पदार्थोंकी आशा रखना, किसी भी रूपमें इन्द्रिय-भोगोंमें सुख समझना और उनकी कामना करना, शरीरके आराम तथा मान आदिके लिये इच्छा करना--ये ही सब दुःख, अशान्ति और विषादके कारण हैं।

२५. प्रश्न- दुःख आने ही न पाये इसका क्या उपाय है ?

उत्तर- भगवान्के प्रत्येक विधानमें कल्याण देखना, उनके प्रत्येक दानमें उनकी कृपाका अनुभव करना, उनकी प्रत्येक चेष्टामें उनके सहृदयपनके दर्शन करना ही हमारा कर्त्तव्य है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो किसी भी अवस्थामें दुःख हमारे समीप नहीं आ सकता।

२६. प्रश्न- भगवान् दुःख भी देते हैं क्या ?

उत्तर- भगवान् दुःख नहीं देते, दुःख निवारणका उपाय करते हैं। पापरूपी मैलको धोने या अघरूपी घावका घातक प्रभाव मिटानेके लिये क्षणिक दुःखरूपी उपचार स्वीकार करना ही चाहिये और इसमें भगवान्की परम दया माननी चाहिये।

२७. प्रश्न- मनमें निराशा, आशान्ति आये तो क्या करें ?

उत्तर- भगवान्के शुद्ध बलपर अपनेमें साहस, धैर्य, सद्गुण और कर्मण्यताका अनुभव करनेसे चित्तमें उल्लास होगा और जीवनमें आशाका संचार होगा। सफलता चरण चूमनेके लिये लालायित रहेगी।

२८. प्रश्न- मनकी कमजोरी प्रतीत हो तब क्या करें ?

उत्तर- आप शक्तिका स्मरण करेंगे तो शक्तिशाली होंगे,

दुर्बलताका स्मरण करेंगे तो दुर्बल बनेंगे--यह है मनोवैज्ञानिक तत्त्व। हम जैसी भावना करते हैं वैसा ही बन जाते हैं।

२९. प्रश्न- विपत्ति कैसे मिटे ?

उत्तर- भगवान्‌की गोदका आश्रय ले लेनेपर सारी विपत्तियाँ, समस्त क्लेश एक महान् आनन्दके रूपमें परिणत हो जाते हैं। भगवान्‌के सन्मुख होते ही, सब दुःख भगवान्‌की छाया पड़ते ही भगवत्स्वरूप हो जाते हैं।

३०. प्रश्न- समस्त दुःखोंकी जड़ क्या है ?

उत्तर- अहंकार ही सभी दुःखोंके कारणभूत अहंकार, कामना, ममता, आसक्ति आदिकी जड़ है। जिसका जितना ही अहंकार बढ़ा है उतनी ही ममता, आसक्ति और कामना बढ़ी है और उतनी ही मात्रामें वह अधिक-से-अधिक संतप्त, अशान्त और बन्धनग्रस्त है।

३१. प्रश्न- इससे छूटनेका उपाय क्या है ?

उत्तर- इसके लिये भगवान्‌का भजन करना चाहिये। भगवान्‌की माया बड़ी दुरत्यय है, मायाका आवरण हटे बिना अहंकारसे छुटकारा पाना बड़ा ही कठिन है और मायाके महासागरसे वही पार हो सकता है, जो मायापति भगवान्‌के शरणापन्न होकर उनका भजन करता है। बस, भगवान्‌को ही एकमात्र अपना मानकर लोभीके धनकी भाँति उनके हृदयमें बसनेका सौभाग्य प्राप्त कीजिये।

३२. प्रश्न- समस्त पापोंका और सर्वनाशका मूल क्या है ?

उत्तर- विषय चिन्तन।

३३. प्रश्न- विषय चिन्तन कब तक होता है ?

उत्तर- जबतक विषयोंमें सुखकी प्राप्तिका भ्रम है।

३४. प्रश्न- संकट या विपत्ति निवारणके लिये क्या उपाय है ?

उत्तर- भगवान्‌के शरण होकर केवल उन्हींपर पूर्ण निर्भर होनेसे भगवान्‌की महान् शक्ति सहायता करने लगेगी। भगवान्‌की कृपाशक्तिका आश्रय, पूर्ण आश्रय होनेपर आपकी विपत्तियाँ चाहे जितनी बड़ी हो, दुःख कितने भी भयानक हों, बन्धन कितने ही कठिन हों, आप अपनेको इन सबसे मुक्त कर सकते हैं।

३५. प्रश्न– अन्तर्व्यथा कैसे मिटे ?

उत्तर– इसके दो उपाय हैं--या तो आत्मशक्तिपर विश्वास करके बदलेमें ऐसा निश्चय कीजिये कि 'मेरे अन्दर व्यथा है ही नहीं। मैं सर्वथा, सर्वदा निश्चिन्त, प्रफुल्ल, आनन्दमय और परम प्रसन्न हूँ।' अथवा भगवान्‌की नित्य सहज मंगलकारिणी कृपा-शक्तिपर विश्वास करके ऐसा निश्चय कर लीजिये कि 'उनकी कृपासे मेरी व्यथा सदाके लिये विलीन, विनष्ट हो गयी है।'

३६. प्रश्न– 'मैं दुःखसे पीड़ित रहता हूँ, मेरी आत्माको क्षणभरके लिये भी शांति नहीं मिलती' इसका कारण और इससे निवृत्तिका उपाय क्या है ?

उत्तर– जब मनुष्य प्रबल रूपसे किसी अभावका अनुभव करने लगता है, तब उसे अशान्ति तथा दुःख होता ही है। पर यह दुःख विचारसे टल सकता है। सुखका हेतु मनका विचार है, कोई वस्तु नहीं है। आप यदि मनमें ऐसा निश्चय कर लें कि 'भगवान्‌ने मेरा कल्याण इसीमें सोचा है' तो आपका दुःख मिट सकता है।

३७. प्रश्न– दुःखोंको मिटानेके लिये शरीरका अन्त कर देना क्या उचित है ?

उत्तर– शरीरका अन्त कर देनेसे दुःख तो मिटेंग नहीं; प्रत्युत वह एक भयानक अपराध होगा और उसका भीषण परिणाम परलोकमें भोगना पड़ेगा।

अगर चाहते परम शान्ति, तो अहंकारका कर दो त्याग।
ममता और कामना छोड़ो, तनिक न रखो भोगमें राग॥
अथवा प्रभु जो सर्वशक्तिधर, सर्वेश्वर, सर्वज्ञ, सुजान।
उनकी सहज सुहृदतापर रक्खो अखण्ड विश्वास महान॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १३०५)

सुख-दुःख और प्रारब्ध

३८. प्रश्न- हमें जीवनमें जो सुख-दुःख मिलते हैं उसका विधान कैसे होता है ?

उत्तर- हमारा यह जन्म सुख-दुःखकी प्राप्तिके लिये भाग्यके द्वारा नियन्त्रित है।

३९. प्रश्न- क्या पुरुषार्थ भाग्यके विधानको मिटा सकता है ?

उत्तर- साधारण पुरुषार्थ भाग्यके विधानको नहीं मिटा सकता।

४०. प्रश्न- पुरुषार्थ और भाग्यमें कौन बड़ा है ?

उत्तर- पहले जन्मोंका पुरुषार्थ ही दूसरे जन्ममें भाग्य कहलाता है। वस्तुतः पहले जन्मोंके पुरुषार्थका ही नाम अगले जन्ममें भाग्य हो जाता है। अतः वे दोनों एक ही हैं। ऐसी स्थितिमें किसको छोटा कहा जाय और किसको बड़ा।

४१. प्रश्न- क्या प्रारब्धका फल बदला जा सकता है ?

उत्तर- यदि कोई ऐसा प्रबल कर्म बन जाये जो हाथों-हाथ प्रारब्ध बनकर फलदानोन्मुख प्रारब्धको रोककर पहले अपना फल भुगता दे। परंतु ऐसे प्रसंग बहुत कम होते हैं और उनका हमें पूरा पता नहीं लगता।

४२. प्रश्न- क्या हम अपनी बुद्धिके बलसे आनेवाले दुःखको नहीं मिटा सकते ?

उत्तर- बुद्धिपर तकदीर या भाग्यका नियन्त्रण रहता है। भाग्यसे यदि दुःख आनेवाला है तो बुद्धिका निर्णय भी दुःखमें डालनेवाला ही होगा। पर सत्संग-स्वाध्यायके द्वारा यदि बुद्धिको शुद्ध, संयत तथा भगवदभिमुखी बना दिया जाय तो उस शुद्ध बुद्धिसे किये हुए कर्म सुखदायक ही होते हैं।

४३. प्रश्न- प्रारब्ध अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति ही ला सकता है या व्यक्तिको सुखी या दुःखी बना सकता है ?

उत्तर- जब तुम्हारा भगवान्पर और उनके स्वरूपभूत गुणोंपर विश्वास हो जायगा तब तुम्हें सांसारिक दृष्टिसे महान् दुःखमयी, कष्टमयी, संतापमयी स्थितिमें भी परम शान्ति तथा परम सुखकी अनुभूति होगी।

किसी स्थिति, घटना या वस्तुमें सुख-दुःख नहीं है।

४४. प्रश्न- मनुष्य कर्म करनेमें स्वतन्त्र हैं या परतन्त्र?

उत्तर- मनुष्यको कर्म करनेकी जो शक्ति मिली है, इसमें तो परतन्त्रता है और शक्ति पाकर कर्म कैसा करे, इसमें उसकी स्वतन्त्रता है।

४५. प्रश्न- बहुत बार देखते हैं पाप, छल-कपट करनेवाले बड़े सुखसे रहते हैं और धर्मके मार्गपर चलते हुए जो भजन करते हैं वे बड़े दुःखी रहते हैं। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर- यह बात सर्वथा निश्चित नहीं है। थोड़ी देरके लिये यह मान भी लिया जाय तो इसका मतलब यह नहीं है कि दोनोंके इसी जन्मके कर्मोंका ही यह फल उन्हें मिल रहा है। जिन कर्मोंके द्वारा यह शरीर प्राप्त हुआ है, वे कर्म प्रारब्ध रूपसे उन्हें इस समय फल भुगता रहे हैं।

४६. प्रश्न- जब ईश्वरकी इच्छाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता तब पाप कैसे हो सकता है?

उत्तर- पापी और पुण्यात्मा दोनोंके शरीर और इन्द्रियाँ ईश्वरकी शक्तिसे ही अपने कार्यमें समर्थ होते हैं। चेष्टामें ईश्वरीय शक्ति काम करती है और उसी चेष्टाको पुण्यमय तथा पापमय बनानेमें मनुष्यका आन्तरिक भाव कारण बनता है।

४७. प्रश्न- जब सब कार्य भगवान्‌की प्रेरणासे होते हैं, तब कर्मका शुभाशुभ भोग क्यों मिलता है?

उत्तर- जीवोंको कर्मका दण्ड नहीं मिलता। जीव भगवान्‌की प्रेरणा भूलकर अपनेआप कर्त्ता बन बैठते हैं, इस दुरभिमानताका ही उन्हें दण्ड मिलता है। भगवान् ही सब कुछ करवाते हैं--यह भाव यथार्थरूपसे होनेपर अशुभ रहता ही नहीं और यदि शुभाशुभ रहे तो भी दायित्व भगवान्‌का हो जाता है। कर्त्तापन होनेपर ही कर्म बनता है और कर्म बननेपर ही कर्त्तापर जिम्मेवारी आती है।

४८. प्रश्न- किसप्रकारके कर्म करनेसे दुःख नहीं होगा?

उत्तर- जो कर्म राग-द्वेष-रहित और वशमें किये हुए मन-इन्द्रियोंसे होते हैं, उनसे प्रसाद--चित्तकी निर्मलता-प्रसन्नता या भगवान्‌की कृपा प्राप्त होती है और उससे समस्त दुःखोंका नाश हो जाता है।

४९. प्रश्न- कर्म कितने प्रकारके होते हैं ?

उत्तर- कर्म तीन प्रकारके होते हैं। संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण।

५०. प्रश्न- संचित कर्म क्या है ?

उत्तर- पिछले असंख्य जन्मोंके और इस क्षणसे पूर्वतकके जितने भी कर्म बिना भोगे हुए जमा हैं उनका नाम संचित कर्म है।

५१. प्रश्न- प्रारब्ध कर्म क्या है ?

उत्तर- संचित कर्मोंमेंसे जितने कर्म इस जन्ममें फल देनेको उन्मुख होते हैं उन्हें प्रारब्ध नाम दिया गया है।

५२. प्रश्न- क्रियमाण कर्म क्या है ?

उत्तर- जो कुछ सकामभावसे नये कर्म किये जाते हैं वह क्रियमाण कर्म है ?

५३. प्रश्न- पाप प्रारब्धसे होते हैं या विषयासक्ति से ?

उत्तर- पापोंका मूल विषयासक्ति है। पाप प्रारब्धसे नहीं होते। आसक्ति विषयोंके चिन्तनसे होती है। अतएव विषय चिन्तन ही सर्वनाशका प्रधान कारण है।

५४. प्रश्न- प्रारब्ध कैसे मिटे ?

उत्तर- प्रारब्धका भोग तो अवश्य ही भोगना पड़ता है, परन्तु सच्चे भावसे भगवान्‌का मंगल-विधान मान लेनेपर या ज्ञानके द्वारा भोक्तृत्व--बुद्धि मिट जानेपर सुख-दुःख नहीं होते ?

५५. प्रश्न- संचित कर्मका नाश कैसे हो ?

उत्तर- संचित कर्मका नाश ज्ञानाग्निसे, भक्तिसे और निष्कामकर्मसे हो सकता है।

५६. प्रश्न- 'क्रियमाण' संचितका अंग न बने, कोई उपाय है क्या?

उत्तर- 'क्रियमाण' का अभाव ज्ञानके द्वारा कर्तृत्व बुद्धि न रहनेपर, केवल भगवत्प्रीत्यर्थ भगवान्‌की पूजाके रूपमें कर्म करनेपर अथवा कर्मोंमें सकामभाव न रहनेपर हो सकता है।

५७. प्रश्न- स्फुरणा कैसे होती है ?

उत्तर- जैसा अच्छा बुरा संचित होता है वैसी ही अच्छी बुरी

स्फुरणायें होती हैं, परन्तु अधिकतर स्फुरणायें उसी संचितकी होती हैं जो नवीन होता है।

५८. प्रश्न- अच्छे-बुरे कर्मोंका फल किस प्रकार भोगा जाता है?

उत्तर- कर्मोंका फल तीन प्रकारसे भोगा जाता है।

१- तुरंत प्रारब्ध बनकर इसी जीवनमें अनुकूल या प्रतिकूल भोगके रूपमें

२- स्वर्ग और नरक लोकोंमें सुख-दुःख भोग रूपमें।

३- अच्छी-बुरी योनियोंमें सुख-दुःख भोग रूपमें।

५९. प्रश्न- निरंतर भजन करनेवाला अन्त समयमें मति खराब हो जानेसे गिर जाता है तथा हमेशा पाप करनेवाला अन्त समयमें शुद्धबुद्धि होनेके कारण मोक्षको प्राप्त हो जाता है, क्यों?

उत्तर- जिसने जीवनभर भजन किया है उसकी मति अन्तमें भजनमें होगी और जिसने पाप किया है उसकी पापमें होगी। अधिकांशमें ऐसा ही होता है। कभी-कभी इसके विपरीत भी होता है तो उसमें भी पूर्वकृत कर्म ही कारण हैं। अतएव वर्तमानमें सदा शुभ करने चाहिये वे भी भगवान्‌का चिन्तन करते हुए।

६०. प्रश्न- कर्म करते समय किस बातको सदा ध्यानमें रखें?

उत्तर- 'हमारी जिस क्रियासे दूसरेका बुरा होगा, उस क्रियासे हमारा कभी भला होगा ही नहीं।' यह सिद्धान्तकी बात है और सदा स्मरणीय है।

६१. प्रश्न- किस कर्मका फल कभी बुरा नहीं होता?

उत्तर- बुराईके त्यागका फल और अच्छाईके ग्रहणका फल कभी बुरा नहीं हो सकता?

६२. प्रश्न- अच्छे-बुरे कर्मका निर्णय कैसे करें?

उत्तर- 'आत्मनः प्रतिकूलानि'--इस कसौटीसे कर्त्तव्यका निर्णय करें।

६३. प्रश्न- जब मनुष्य पूर्वनिर्धारित विधानके अनुसार ही कर्म करता है तो फिर उसे कर्मका बन्धन क्यों होता है?

उत्तर- मनुष्य बँधता है ममता और अहंकारके कारण, कर्म और

उसके फलमें आसक्तिके कारण। यदि ईश्वरप्रीत्यर्थ ही सबकुछ किया जाय अथवा अपनेको निमित्तमात्र मानकर अपने ऊपर कर्तृत्वका अभिमान न लादा जाय तो कोई भी कर्म मनुष्यको बाँध नहीं सकता।

६४. प्रश्न– सत्कर्म करनेकी आवश्यकता शास्त्रोंमें क्यों कही गयी है?

उत्तर– मनुष्य जैसा कार्य करता है, जिस प्रकारके कार्योंमें उसका मन लगा रहता है, उसी प्रकारका उसका स्वभाव बनता है। सात्त्विक आराधनादि कर्मोंसे सात्त्विक स्वभाव बनता है, अन्तःकरणकी क्रमशः शुद्धि होती है और अन्तमें जीवन सत्त्वमुखी बनकर अन्तःकरणको भगवान्‌की ओर प्रवृत्त कर देता है।

६५. प्रश्न– सांसारिक प्राणी-पदार्थोंसे सम्बन्ध जोड़नेमें प्रयास और समय आवश्यक है। इतनेपर भी इच्छानुसार सम्बन्ध जुड़ना निश्चित नहीं है। क्या प्रभुके साथ सम्बन्ध जोड़नेमें भी यही नियम है?

उत्तर– प्रभुके साथ सम्पर्क स्थापित करनेमें न प्रयासकी आवश्यकता है, न समयकी। तुम्हारी इच्छा होनी चाहिये, तड़प होनी चाहिये; फिर तुम उन्हें केवल जान ही नहीं लोगे, उन्हें देख भी लोगे और उनके साथ घुल-मिल भी जाओगे। उनके दिव्य लीलाक्षेत्रमें तुम्हारा सहज प्रवेश हो जायगा।

६६. प्रश्न– क्या अकाल मृत्यु भी प्रारब्धसे होती है?

उत्तर– वास्तवमें अकाल मृत्यु प्रायः किसीकी नहीं होती। प्रत्येक जीवकी मृत्युका समय उसके जन्मके साथ ही नियत हो जाता है। वह समय आनेपर ही मृत्यु होती है।

६७. प्रश्न– तब आत्महत्याको आप क्या कहेंगे?

उत्तर– आत्महत्यासे होनेवाली मृत्युको हम 'स्वेच्छा प्रारब्ध'का फल कह सकते हैं।

६८. प्रश्न– फिर आत्महत्याको बड़ा पाप क्यों कहते हैं?

उत्तर– आगमें जलने या पानीमें डूबने आदिसे होनेवाली मृत्युको 'अपमृत्यु' कहते हैं। इससे जीवकी सद्‌गतिमें बाधा पड़ती है। अनिच्छा प्रारब्धसे होनेवाली अपमृत्यु पापका फल होनेपर भी स्वयं पापरूप नहीं है। परंतु आत्महत्या पापका फल होनेके साथ-साथ स्वतः एक महान्

पाप है। आत्महत्याका फल बड़ा भयंकर बताया गया है।

६९. प्रश्न- कर्मफलका नियामक ईश्वरको क्यों कहते हैं? अपने कर्मको क्यों नहीं?

उत्तर- कर्म जड़ है। कर्मका आरम्भ होता है और समाप्ति होती है। अतः कर्म अनित्य है, कर्म कुछ कर नहीं सकता, उसका संस्कार शेष रह जाता है। ईश्वर अनादि, अनन्त और नित्य है। कौन कर्म कैसा है, किसका कैसा कर्मफल होगा और वह कब मिलेगा--इसका ज्ञान सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान् ईश्वरके सिवा किसको रह सकता है। इसलिये ईश्वर ही कर्मफलका नियामक है।

जैसा बीज, बहुत-से होते फल वैसे ही, उसी प्रकार।
कर्म-बीज होता जैसा, फल भी होते उसके अनुसार॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १४५९)

स्वास्थ्य

७०. प्रश्न- स्वास्थ्यके लिये क्या लाभप्रद है?

उत्तर- प्रकृति सेवन, नियमित व्यायाम और आसनोंसे स्वास्थ्यको बड़ा लाभ पहुँचता है।

७१. प्रश्न- क्या अस्वस्थता साधनमें विघ्न है?

उत्तर- साधनमें पहला विघ्न है स्वास्थ्यका बिगड़ जाना। स्वास्थ्य रक्षाके लिये संयम और नियमित खान-पान करना चाहिये। स्वास्थ्य ठीक रहता है तभी मनुष्य साधन कर पाता है।

७२. प्रश्न- प्रातः जल्दी उठनेका स्वास्थ्यसे क्या सम्बन्ध है?

उत्तर- सूर्योदयसे लगभग ३ से १॥ घंटे पूर्व उठ जाना चाहिये। इस समय उठनेवालेका स्वास्थ्य, धन, विद्या, बल और तेज बढ़ता है।

७३. प्रश्न- इतना जल्दी न उठें तो कोई नुकसान है क्या?

उत्तर- जो सूर्य उगनेके समय सोता है, उसकी उम्र और ताकत घटती है और वह नाना प्रकारकी बीमारियोंका शिकार होता है।

७४. प्रश्न- रोग कैसे मिटे ?

उत्तर- प्रसन्नतासे समस्त रोगोंका नाश होता है।

७५. प्रश्न- प्रातः भ्रमणके लिये क्यों कहा जाता है ?

उत्तर- नियमपूर्वक घूमनेके व्यायामसे और शुद्ध वायुसेवनसे शरीरको बहुत लाभ पहुँचता है।

७६. प्रश्न- घूमनेमें क्या ध्यान रखना चाहिये ?

उत्तर- सुबह और शामको नित्य खुली, ताजी और शुद्ध हवामें अपनी शक्ति अनुसार थकान न मालूम होनेतक साधारण चालसे रीढ़की हड्डीको सीधे रखकर घूमना चाहिये। बहुत ठंडी हवामें, बरसातमें, अंधड़में तथा गंदी जगहोंमें न घूमे।

७७. प्रश्न- क्या शरीरमें प्रतिदिन तेल लगाना चाहिये ?

उत्तर- रोज सारे बदनमें तेल लगानेसे बड़ा लाभ होता है। गलेके नीचे सरसोंका तथा मस्तकपर तिल आदिका तेल लगावें। अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या, सूर्यकी संक्रान्ति और रविवारके दिन तेल न लगावे।

७८. प्रश्न- स्नानके समय क्या-क्या ध्यान रखना चाहिये ?

उत्तर- प्रातःकाल सूर्योदयसे पूर्व स्नान करे। शरीरको अंगोछे और हाथसे खूब मल-मलकर नहाना चाहिये। नहाते समय ऐसा निश्चय करे कि मेरे शरीरके साथ मनका मल भी धुल रहा है। नहाते समय भगवान्‌का नामोच्चारण अवश्य करते रहना चाहिये। नहानेके लिये बारहों महीने ताजा ठंडा जल ही उत्तम है। ज्वर, अतिसार आदि रोगोंमें न नहावे।

७९. प्रश्न- दाँतोंकी सुरक्षाके लिये क्या करना चाहिये ?

उत्तर- दिन-रातमें जब-जब मल-मूत्र त्याग करे, ऊपर-नीचेके दाँतोंको जोरसे दबाकर सटा हुआ रखना चाहिये। इससे दाँत मजबूत होते हैं। दाँतोंकी कोई बीमारी सहजमें नहीं हो पाती। बहुत गरम तथा अति ठंडे जलसे कुल्ला करनेसे दाँतोंकी जड़ ढीली हो जाती है।

८०. प्रश्न- ज्वरनाशका उपाय क्या है ?

उत्तर- रविवारको प्रातःकाल रक्त अपामार्गकी जड़ उखाड़कर

उसके सात टुकड़ोंको अच्छी तरह मिलाकर बाँध लिया जाय। फिर उसे दाहिने हाथमें बाँध दिया जाय। एक दो दिनोंमें ही ज्वर भाग जाता है।

८१. प्रश्न- कब्जके लिये क्या करना चाहिये?

उत्तर- कब्ज रहती हो तो साग अधिक खाय, हर्रेकी फाँकी रातको ले लें। पंचसकार चूर्ण भी अच्छा है।

८२. प्रश्न- परमौषधि क्या है?

उत्तर- सभी दवाइयोंकी अपेक्षा भगवत्-स्मरण लोक-परलोक-साधिनी परमौषधि है। इसीके सेवनमें तन-मनको नियुक्त करना चाहिये।

८३. प्रश्न- स्वास्थ्यका ठीक रहनेसे क्या तात्पर्य है?

उत्तर- असली स्वस्थता अपने अभिन्न स्वरूप भगवान्‌में स्थित रहनेमें ही है। जगत्‌में, प्रकृतिमें स्थिति ही अस्वस्थता है। अतएव जो भगवान्‌में स्थित हैं, उनके सिवा सभी अस्वस्थ हैं। यही स्वास्थ्यका ठीक रहना है।

८४. प्रश्न- असली अस्वस्थता क्या है?

उत्तर- असली अस्वस्थता तो मनकी होती है और उसी मानसिक अस्वस्थताके कारण मनुष्यके द्वारा विभिन्न अवाञ्छनीय कार्य होते हैं और उसीके कारण उसे भय, विषाद, क्लेश और शोक आदि होते हैं।

८५. प्रश्न- मानसिक दुर्बलताके लक्षण क्या हैं?

उत्तर- अशुभ चिन्तन मानसिक दुर्बलता है और श्रीभगवान्‌में अविश्वासका परिचय देनेवाला कुलक्षण है।

८६. प्रश्न- मानस रोग क्या हैं?

उत्तर- काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सरता, ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा और वैर आदि मानस रोग हैं।

८७. प्रश्न- मानसिक स्वास्थ्यमें सुधार कैसे हो?

उत्तर- मनमें प्रेमयुक्त भगवान्‌का चिन्तन, प्रसन्नता, शान्ति, निर्वैरता, निरभिमानता, नम्रता, सौम्य आदि बढ़े इसके लिये अथक प्रयत्न करना चाहिये।

८८. प्रश्न- रोगनाशका पारमार्थिक उपाय क्या है?

उत्तर- सबसे बड़ी दवा है विश्वासके साथ भगवान्‌का नाम

लेना। फलमें सन्देहरहित होकर सरल विश्वासके साथ 'अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः' इन नामोंका जप कीजिये।

८९. प्रश्न- रोग-दुःखादिकी अवस्थाको तप रूपमें सार्थक कैसे किया जाय?

उत्तर- रोग-दुःखादिके समय यह मान लिया जाय कि यह तप हो रहा है तो रोग दुःखादिजनित मानस-कष्ट नष्ट हो जाता है और सहज ही तपके फलकी प्राप्ति होती है।

९०. प्रश्न- रोग-दुःखादिमें क्या सुखकी अनुभूति भी हो सकती है?

उत्तर- यदि रोग-दुःखादिके रूपमें भगवान्‌के दर्शन किये जायँ, विश्वासपूर्वक यह माना जाय कि रोग-दुःखादिका साज सजकर प्रभु ही पधारे हैं तो उनके मधुर आलिंगन-सुखका सौभाग्य प्राप्त होता है।

९१. प्रश्न- शारीरिक रोग मिटानेके लिये कुपथ्यका त्याग, सुपथ्यका ग्रहण और औषधियोंका सेवन यह तीन बातें चाहिये। भवरोगको मिटानेका क्या उपाय है?

उत्तर- इसके लिये भी तीन बातें होनी चाहिये--

१- पापका त्याग--यही कुपथ्यका त्याग है।

२- दैवी सम्पदाका अर्जन--यही सुपथ्यका ग्रहण है।

३- भगवान्‌का भजन--यही परम औषधि है।

हो गया उनका, वही, बस, स्वस्थ है।
शेष सारे रुग्ण, जो प्रकृतिस्थ हैं॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १५०३)

मिला हुआ जो न्यायोपार्जित धनसे जो विशुद्ध आहार।
हिंसा-रहित, पवित्र, शुद्ध तन-मनसे हो निर्मित अविकार॥
सादा, सात्त्विक, युक्त, स्वास्थ्यकर हो, जिससे न बढ़े व्यय-भार।
प्रभुको अर्पित भोजन, करता उदय हृदयमें शुद्ध विचार॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १४६९)

आहार

९२. प्रश्न- भोजन कैसा होना चाहिये?

उत्तर- **भोजन सादा, सात्त्विक, सहजमें पचनेवाला करें।**

९३. प्रश्न- भोजनमें क्या सावधानी रखें?

उत्तर- **भूखसे ज्यादा कभी न खायें, कम खायें।** अच्छी तरह चबाकर खायें।

९४. प्रश्न- भोजनमें कौन-सी वस्तुओंसे बचना चाहिये?

उत्तर- **प्याज, लहसुन तथा उत्तेजक तामस वस्तु न खायें। मसाला कम-से-कम खायें। नशीली चीज न खायें न पीयें। किसीकी जूठन कभी न खायें।**

९५. प्रश्न- भोजनका उद्देश्य क्या होना चाहिये?

उत्तर- **भोजन स्वास्थ्य रक्षा तथा पवित्र मनके निर्माणके लिये करें, स्वादके लिये नहीं।**

९६. प्रश्न- भोजनकी पवित्रतापर शास्त्रोंमें क्यों जोर दिया गया है?

उत्तर- **भोजनका मन तथा शरीरपर अनिवार्यरूपसे बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। यहाँ तक कि भोजन बनानेवाले व्यक्तिके विचार-परमाणु भी भोजन करनेवालेके मनपर अपना प्रभाव डालते हैं। इसीलिये भोजनकी पवित्रतापर शास्त्रोंमें जोर दिया गया है।**

९७. प्रश्न- भोजनमें और क्या-क्या सावधानी रखनी चाहिये?

उत्तर- **अन्नके अनुसार ही मन बनता है। अन्न सात्त्विक है या तामसिक, कैसी कमाईका है, भोजन बनानेवाला कौन है और भोजन बनाते समय उसकी चित्तवृत्ति कैसी है। भोजनका स्थान कैसा है, पंक्तिमें साथ-साथ कौन बैठे हैं तथा भोजन परोसनेवाले किस भावके कौन हैं।**

९८. प्रश्न- भोजन कैसी कमाईका है--इसे देखना जरूरी क्यों है?

उत्तर- **शुद्ध कमाईका अन्न खाओ, जो पैसा चोरीसे, छलसे, बेईमानीसे, दूसरेके हकको मारकर आया हुआ हो, उससे मिला हुआ अन्न बहुत दूषित होता है। बुद्धिको सहज ही बिगाड़ देता है।**

९९. प्रश्न- सहभोजमें क्या दोष है?

उत्तर- किसीके साथ बातचीत करनेसे, देहका स्पर्श करनेसे, एकसाथ सोनेसे तथा एक साथ भोजन करनेसे एक देहके पाप दूसरी देहमें प्रवेश करते हैं, इसी प्रकार पुण्यात्माके पुण्य भी एक देहसे देहान्तरमें प्रवेश करते हैं।

१००. प्रश्न- क्या भोजनके समय दिशाका ध्यान रखना जरूरी है?

उत्तर- पूर्वकी ओर मुख करके भोजन करो। उत्तरकी ओर मुँह करके भोजन नहीं करना चाहिये।

१०१. प्रश्न- भोजनका आध्यात्मिक रूप क्या है?

उत्तर- भोजन एक पवित्र यज्ञ है, जिसके द्वारा वैश्वानररूपसे अन्तरमें विराजित भगवान्‌की पूजा होती है।

१०२. प्रश्न- भोजनमें क्या न खायें?

उत्तर- मांस, मछली, शराब, अंडेका सेवन कभी न करें।

मांस, मद्य, अंडे, अशुचि, पापार्जित, उच्छिष्ट।
अघ-स्पर्शित, दुर्गन्धयुत, वर्धक व्याधि-अरिष्ट॥
इन सबका कर त्याग नित, करो शुद्ध आहार।
अर्पण कर प्रभुको प्रथम, मनमें भर सत्कार॥
होगा शुद्धाहार तो, मन भी होगा शुद्ध।
मनकी शुद्धि बनायगी, जीवनको परिशुद्ध॥
जीवनकी परिशुद्धिमें, होंगे शुचि सत्कर्म।
उनसे होगा मुक्तिप्रद विकसित मानव-धर्म॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १४७०)

वस्त्र

१०३. प्रश्न- आप खादीके कपड़े पहननेके लिये क्यों कहते हैं?

उत्तर- मैं तो अपने विश्वासके अनुसार शुद्ध धार्मिक दृष्टिसे ही खादीका व्यवहार करनेके लिये सभी महानुभावोंसे प्रेमपूर्वक अनुरोध करता हूँ। विलायती और मिलके कपड़ोंमें चर्बी लगती है, जिससे अपवित्रता और हिंसा दोनों ही सिद्ध हैं।

१०४. प्रश्न- रेशमी कपड़े तो पवित्र माने जाते हैं?

उत्तर- रेशमी वस्त्रोंको प्राचीनकालमें शुद्ध मानते थे, पर अब तो रेशम बनानेमें ही असंख्य जीव उबलते हुए जलमें डाले जाते हैं। इससे रेशम भी अपवित्र और हिंसामय है।

१०५. प्रश्न- क्या कपड़े पहननेका असर साधनपर भी पड़ता है?

उत्तर- पवित्रताका असर मनपर होता है जिससे भगवान्‌में मन लगता है। खादी पवित्र होनेके साथ ही मोटी होनेसे विलासिता दूर होती है और सहज ही वैराग्य बढ़ता है। सदाचार तो उसमें आ ही गया। पवित्रता, सादगी, सदाचारके मिल जानेसे एक ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जो परमार्थमें बड़ी सहायता करती है।

१०६. प्रश्न- कपड़े पहननेमें और किन बातोंका ध्यान रखना चाहिये?

उत्तर- १-कम-से-कम पहने। लज्जा-रक्षा, शीत-ग्रीष्म आदिसे रक्षाके लिये कपड़े पहने। शौकीनी या दिखानेके लिये नहीं।

२- सादे, स्वच्छ, कम कीमतके व्यवहार करें।

३- भड़कीले, फैशनदार, अधिक कीमतके कपड़े न पहनें।

४- वस्त्रोंका अधिक संग्रह न करें।

५- देशी ढंगके कपड़े पहनें, विदेशी ढंगके नहीं।

६- दूसरेके पहने हुए कपड़े, धोती आदि न पहने।

सदाचार एवं शिष्टाचार

१०७. प्रश्न- सदाचार क्या है ?

उत्तर- साधु पुरुष जिस आचारका पालन करते हैं अथवा जिसके पालन करनेसे मनुष्य सदाचारी, साधुहृदय बन सकता है, उसे सदाचार कहते हैं।

१०८. प्रश्न- सदाचारसे क्या लाभ होता है ?

उत्तर- सदाचारमें लगे हुए मनुष्यका शरीर स्वस्थ, मन शान्त और बुद्धि निर्मल होती है और उसका अन्तःकरण शीघ्र ही शुद्ध हो जाता है। सदाचारसे मनुष्य आयु और अक्षय धनको प्राप्त करता है। इससे अपमृत्यु आदिका भी नाश होता है।

१०९. प्रश्न- सदाचारका परम साधन क्या है ?

उत्तर- परमात्मा ही सत् है, उनमें रमण करना ही सच्चा सदाचार है। परमात्माकी विस्मृति ही दुराचार है। अतएव जहाँतक हो तन-मन-धनको परमात्माको अर्पण करके, सब कुछ परमात्माका समझकर परमात्माकी शक्ति और प्रेरणासे, परमात्माके प्रीत्यर्थ ही तन-मन-वचनसे सब क्रियाएँ करनी चाहिये। यही सदाचारका परम साधन है।

११०. प्रश्न- सदाचारी पुरुषके लिये सबसे अधिक आवश्यक क्या है ?

उत्तर- काम-क्रोधादि मानसिक दोषोंसे बचकर भगवान्‌में मन लगाना।

१११. प्रश्न- व्यवहारमें दोष क्यों आता है ?

उत्तर- व्यवहारमें गड़बड़ी चाहसे आती है, अतः किसीसे कभी कुछ चाहे ही नहीं।

११२. प्रश्न- हमसे कभी बुरा कर्म न बने, इसका क्या उपाय है ?

उत्तर- भगवान्‌के बलका आश्रय, भूल हो जानेपर पश्चात्ताप और भूल फिर न हो इसके लिये दृढ़ निश्चय।

११३. प्रश्न- स्त्रियोंके साथ व्यवहारमें क्या सावधानी रखें ?

उत्तर- छींकती हुई, खाँसती हुई, जम्हाई लेती हुई, चाहे जैसे बैठी हुई और नग्न स्त्रीको कदापि न देखें। स्त्रियोंमें जानेकी आवश्यकता हो तो चुपचाप न जाकर भगवन्नाम उच्चारण करते हुए जाना चाहिये।

स्त्रियोंसे कभी लड़ाई-झगड़ा, विवाद, तर्क, शास्त्रार्थ न करें। स्त्रियोंके पास एकान्तमें न रहें।

११४. प्रश्न- रास्ता किन लोगोंके लिये छोड़ना चाहिये?

उत्तर- बोझा उठाये हुए आदमी, गर्भिणी स्त्री, रोगी, वृद्ध, कुलवती स्त्री, अपनेसे बड़े लोग, विद्वान् और साधु-महात्मा मार्गमें मिल जायँ तो उनके लिये रास्ता छोड़ दें?

११५. प्रश्न- नौकरके साथ कैसा व्यवहार करें?

उत्तर- नौकरोंके साथ अच्छा बर्ताव करें, बीमारी और तकलीफमें उनकी सेवा और यथाशक्ति सहायता करें। उन्हें नीचा न समझें।

११६. प्रश्न- चौराहे पर कब खड़ा नहीं रहना चाहिये?

उत्तर- मध्याह्नके समय, आधी रातको, श्राद्धमें भोजन करके, प्रातः-सायंकालकी सन्धिके समय चौराहेपर न खड़ा रहे।

११७. प्रश्न- बच्चोंको सदाचार कैसे सिखायें?

उत्तर- बच्चोंको मारकर, उनपर खीजकर, उन्हें सदाचारी नहीं बनाया जा सकता। पहले खुद सदाचारी बननेसे ही वे सदाचारी बनेंगे।

११८. प्रश्न- शिष्टाचार किसे कहते हैं?

उत्तर- एक व्यक्ति दूसरेके साथ जो सभ्यतापूर्ण व्यवहार करता है, उसे शिष्टाचार कहते हैं। शिष्टाचार दिखावटी नहीं सच्चा होना चाहिये।

११९. प्रश्न- ध्यान रखनेके लिये कुछ शिष्टाचारकी बातें बताइये?

उत्तर- १-बड़ोंको 'आप' कहो और अपने लिये 'हम'का प्रयोग मत करो।

२-जब किसी नवीन व्यक्तिसे परिचय कराया जाय, तब उन्हें प्रणाम करना चाहिये।

३-लोगोंको बुलाने, पत्र लिखने या उनकी चर्चा करनेमें उनके नामके आगे 'श्री' और अंतमें 'जी' अवश्य लगाओ।

४-बच्चोंको चूमों मत। यह स्वास्थ्यके लिये हानिकारक है। स्नेह प्रकट करनेकी भारतकी पुरानी रीति है मस्तक सूँघ लेना।

५- किसी धर्म या सम्प्रदायपर आक्षेप न करो।

६- बिना आवश्यकताके किसीकी जाति, आमदनी, वेतन मत पूछो।

७- कोई अपना परिचित बीमार हो जाय तो उसके पास कई बार जाना चाहिये। बिना पूछे औषधि नहीं बताना चाहिये।

८- बातचीतमें कम बोलो। दूसरोंकी बात धैर्यपूर्वक सुनो।

९- किसीसे मिलो तो उसका कम-से-कम समय लो।

१०- कोई रास्ता पूछे तो उसे समझाकर बताओ और संभव हो तो कुछ दूरतक जाकर मार्ग दिखा आओ।

११- किसीके घर जाते या आते समय द्वार बंद करना मत भूलो। कोई वस्तु किसीकी उठाओ तो फिर यथास्थान रख दो।

१२- बिना पूछे राय मत दो।

१२०. प्रश्न- सरलता भी कोई गुण है क्या ?

उत्तर- सरलता शुद्ध हृदयका संकेत है। सरल हृदय ही पवित्र होता है।

अपने लिये चाहते सबसे तुम जो कुछ, जैसा व्यवहार।
वैसा ही तुम करो सभीसे, सदा सजग रहकर, व्यवहार॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १४६०)

गृहस्थके व्यवहार

१२१. प्रश्न- गृहस्थमें सफल बननेके लिये कैसा व्यवहार करें?

उत्तर- प्रेम चाहे नहीं, करें। सेवा चाहे नहीं, करें। आशा करे नहीं, दूसरेकी निर्दोष आशा भरसक पूरी करे। कर्त्तव्य अपना देखें, दूसरेका नहीं। दोष अपना देखें, दूसरेका नहीं।

१२२. प्रश्न- गृहस्थ व्यवहार किस भावसे करें?

उत्तर- गृहस्थ सोचे कि हमें तो भगवान्‌का काम करना है। वे कुछ भी करावें। घर भी उनका, घरकी सामग्री उनकी, घरके आदमी भी उनके और हम उनके। वे चाहे जैसे चाहें जिसका उपयोग करें। न जीनेमें सुख हो, न मरनेमें दुःख। हर बातके लिये वैसे ही तैयार रहना

चाहिये जैसे आज्ञाकारी सेवक अपने मालिकका हुक्म बजानेके लिये रहता है। बस, मैनेजर बन जाय, मालिक नहीं।

१२३. प्रश्न- किसीके हृदयको कैसे जीता जाय?

उत्तर- प्रेम, स्नेह, सेवा, सत्कारसे ही किसीके हृदयको जीता जा सकता है, उसकी वृत्तिको बदला जा सकता है, विरोधसे नहीं।

१२४. प्रश्न- घरमें जब दूसरा प्रतिकूलताका व्यवहार करे तब कैसे प्रसन्न रहा जाय?

उत्तर- जब हम दूसरेके मनकी बात पूरी नहीं कर सकते, तब दूसरा हमारी बात स्वीकार कर ले, यह आशा ही हमें क्यों करनी चाहिये? परिस्थिति तथा मानवस्वभावकी दुर्बलताको समझकर सदा प्रसन्न-शान्त रहना चाहिये?

१२५. प्रश्न- गृहस्थ जीवनमें मनुष्यका क्या कर्त्तव्य है?

उत्तर- मनका संयोग सदा सर्वदा भगवान्‌में रखें तथा शरीरसे यथायोग्य उचित कार्य सावधानीके साथ भगवान्‌की पूजाकी भावनासे करते रहें। मनमें यह निश्चय कर लें कि 'एकमात्र भगवान् ही मेरे हैं और मैं एकमात्र भगवान्‌का ही हूँ।'

१२६. प्रश्न- किसीको अपने अनुकूल कैसे बनायें?

उत्तर- उसके दोष न देखकर गुणोंकी खोज करनी चाहिये और गुणोंकी मन-ही-मन प्रशंसा करते हुए उसके प्रति सदा सद्भावना करनी चाहिये। आपकी सद्भावनाका उसपर असर होगा और वह क्रमशः अनुकूल बनता चला जायगा।

१२७. प्रश्न- संसारसे जिसको बार-बार विरक्ति होती है और मन परमात्माकी ओर आकर्षित भी होता है, परन्तु गृहस्थाश्रमकी बेड़ी पाँवमें पड़ी है, वह क्या करे?

उत्तर- जब संसारमें प्रीति नहीं है और परमात्माकी ओर मन आकर्षित होता है, तब गृहस्थाश्रमकी बेड़ीके लिये चिन्ता क्यों करनी चाहिये। बेड़ी तो तभी तक है, जबतक मोह है। संसारमें घृणा होनी चाहिये उसके भोग्यरूपसे। अतएव त्याग करके घरमें रहते हुए ही अपनेको भगवान्‌का बना देना चाहिये। सदा भगवान्‌का स्मरण करते

हुए भगवान्‌की सेवा बुद्धिसे ही सारे कर्म यथायोग्य करने चाहिये, फिर समस्त भवबन्धन आप ही कट जायेंगे।

१२८. प्रश्न- घरमें व्यवहार करते समय विशेष ध्यान क्या रखें?

उत्तर- लड़के, लड़कीके साथ व्यवहारमें भेद न रखना। भोजनमें अपने-परायेका भेद न रखना। अतिथि सत्कार करना।

रखो मत आसक्ति कर्ममें, फलमें ममता किसी प्रकार।
भलीभाँति सब कर्म करो समुचित पद्धतिसे बिना विकार॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १४१८)

विवाह

१२९. प्रश्न- विवाहका उद्देश्य क्या है?

उत्तर- त्यागके द्वारा प्रेमकी पवित्रताका संरक्षण और प्रेमको उत्तरोत्तर उच्च स्थितिपर ले जाना ही विवाहका महान् उद्देश्य है।

१३०. प्रश्न- आजकल तो विवाह होनेतक लड़के-लड़की बड़े हो जाते हैं तब वे अपने मनसे वर-वधूका चुनाव क्यों न करें?

उत्तर- लड़के-लड़की अपने लिये अपने मनसे वर-कन्याका चुनाव न करें। कुमार-कुमारी वर-कन्याके निर्वाचनमें माता-पिताका ही अधिकार होना चाहिये और इसीमें लाभ है। उत्तम विवाह और गृहस्थाश्रमकी सुख-शान्तिके लिये माता-पितापर ही यह भार रहना हितकर है। उनको अवस्थाकी अधिकताके कारण अनुभव भी विशेष होता है।

१३१. प्रश्न- विवाह कैसे किया जाय?

उत्तर- शास्त्र-विधिसे विवाह किया जाय। रजिस्ट्रेशन आदिसे नहीं।

१३२. प्रश्न- विवाह किसके साथ नहीं करना चाहिये?

उत्तर- असवर्ण विवाह न करें। परधर्ममें विवाह न करें। विजातीय विवाह न करें।

१३३. प्रश्न- विवाहके बाद आजकल आनन्द (Honey moon) मनानेके लिये जाते हैं। इसमें आपकी क्या राय है?

उत्तर- विवाहके बाद तुरन्त ही विदेशी प्रथाके अनुसार पति-

पत्नी पहाड़ आदिपर आनन्द मनानेके लिये न जायँ।

१३४. प्रश्न- पति-पत्नी प्रेमसे न रह सकें तो तलाक़ देनेमें क्या हानि है?

उत्तर- विवाहमें जहाँ विच्छेदकी संभावना आ जाती है, वहीं नर-नारीका पवित्र और मधुर सम्बन्ध अत्यन्त जघन्य हो जाता है। फिर मनुष्य और पशुमें कोई भेद नहीं रह जाता। तलाककी परिकल्पनाको भी पाप समझे।

१३५. प्रश्न- कन्यादानकी अवधारणा क्या है?

उत्तर- हिन्दू शास्त्रोंके अनुसार कन्या वस्तुतः वररूपमें श्रीनारायणको ही अर्पित की जाती है। लेकिन विवाह पद्धतिके अनुसार जैसा संकल्प होता है, बाहरसे वही होना चाहिये।

पति-पत्नीके कर्त्तव्य

१३६. प्रश्न- विवाहका विधान क्यों किया गया?

उत्तर- मनुष्योंमें पशुकी भाँति यथेच्छाचार न हो, इन्द्रिय-लालसा और भोग भाव मर्यादित रहे, भावोंमें शुद्धि रहे, धीरे-धीरे मनुष्य त्यागकी ओर बढ़े। संतानोत्पत्तिके द्वारा वंशकी रक्षा और पितृऋणका शोध हो, प्रेमको केन्द्रीभूत करके उसे पवित्र बनानेका अभ्यास बढ़े, स्वार्थका संकोच और परार्थ त्यागमय जीवन बने और अन्तमें भगवत्प्राप्ति हो जाय। इन्हीं सब उद्देश्योंको लेकर हिन्दू विवाहका विधान है।

१३७. प्रश्न- पतिका पत्नीके प्रति क्या कर्त्तव्य है?

उत्तर- पत्नीका कभी भी तिरस्कार-अपमान न करे, न कड़ी बात कहे, न धमकाये, डराये, कभी हाथ तो भूल-चूककर भी न उठाये। यह बड़ा पाप है।

१३८. प्रश्न- पतिका क्या धर्म है?

उत्तर- पति स्वयं सदाचारी, मिष्टभाषी, एकपत्नी व्रती, अपनी ही पत्नीमें अनुराग रखनेवाला तथा उसके साथ मित्रवत् सच्चा प्रेम एवं सद्व्यवहार करनेवाला बने।

१३९. प्रश्न- पति पत्नीको सदाचारपरायण कैसे रखे?

उत्तर- पत्नीको प्रेम भरे शब्दमें सत्-शिक्षा देता रहे। अपने उत्तम

सदाचरण तथा सद्व्यवहारसे उसे संतुष्ट तथा सदाचारपरायण रखे।

१४०. प्रश्न- पतिके लिये परमावश्यक क्या है?

उत्तर- पत्नीके संरक्षण, हित-साधन और सुख-सम्पादन। पत्नी उसकी मित्र है, अर्धांगिनी है, दासी कदापि नहीं।

१४१. प्रश्न- पत्नीके सिवा पति अन्य स्त्रीसे कैसा व्यवहार रखे?

उत्तर- पत्नीके सिवा किसी भी पर-स्त्रीका जान-बूझकर स्पर्श न करे, उसके द्वारा माला आदि न पहने। चरण स्पर्श भी न कराये। पराई स्त्रीको माँ समझे।

१४२. प्रश्न- पति-पत्नीके सम्बन्धका स्वरूप क्या है?

उत्तर- पुरुष और प्रकृतिके संयोगसे ही जगत् बना है। प्रकृति शक्ति है और पुरुष शक्तिमान्। शक्तिके बिना शक्तिमान्का अस्तित्व नहीं और शक्तिमान्के बिना शक्तिके लिये कोई स्थान नहीं। इनका परस्पर अविनाभाव सम्बन्ध है। इसी प्रकार नर-नारीका सम्बन्ध है। नर पुरुषका और नारी प्रकृतिका प्रतीक है।

१४३. प्रश्न- पति-पत्नीके कर्त्तव्यका स्वरूप क्या है?

उत्तर- दोनोंके कर्त्तव्य पृथक-पृथक होनेपर भी वे एक ही शरीरके दाहिने और बायें अंगोंके कार्योंकी भाँति एक ही शरीरके पूरक हैं और एक ही शरीरकी स्थिति, समृद्धि, पुष्टि और तुष्टिके कारण हैं। एकके बिना दूसरेका काम नहीं चल सकता। दोनों मिलकर अपने-अपने पृथक् कर्त्तव्योंका पालन करते हुए ही जीवनके परम और चरम लक्ष्य भगवान्को प्राप्त कर सकते हैं। नर भगवान्की प्राप्ति करता है-पतिव्रता नारीके दिव्य त्यागमय आदर्शको सामने रखकर भगवान्के प्रति सम्पूर्णतया आत्मसमर्पण करके और नारी उसी भगवान्की सहज ही प्राप्ति करती है अपने अभिन्नरूप स्वामीका सर्वांगपूर्ण अनुगमन करके-उसके जीवित रहते और प्राण त्यागकरके चले जानेपर भी।

१४४. प्रश्न- स्त्रियोंका मुख्य धर्म क्या है?

उत्तर- स्त्रीके लिये मुख्य धर्म केवल पतिपरायणता ही है। और सारे धर्म तो गौण हैं और उनका आचरण भी केवल पतिकी प्रसन्नताके लिये ही किया जाता है।

१४५. प्रश्न- स्त्रीके लिये पातिव्रत्य क्यों?

उत्तर- यह पातिव्रत्य है--वस्तुतः परमपति परमात्माकी प्राप्ति और प्रीतिके उद्देश्यसे ही। जगच्चक्रके भलीभाँति सञ्चालनके लिये 'पातिव्रत्य' आदर्श विशेष उपयोगी और आवश्यक है। पातिव्रत्यके द्वारा नारी नरको पूर्ण बनाती है और मातृरूपसे जगत्को परम पवित्र चरित्रवान् पुरुषरत्न प्रदानकर भगवान्के मंगल उद्देश्यकी पूर्ति करती है।

१४६. प्रश्न- स्त्रीका वास्तविक सौन्दर्य किसमें है?

उत्तर- क्षमा, प्रेम, उदारता, निरभिमानता, विनय, सहिष्णुता, समता, शान्ति, धीरता, वीरता, परदुःखकातरता, सत्य, सेवा, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शील और प्रभुभक्ति आदि सद्गुण तथा सद्भावमें।

१४७. प्रश्न- लज्जाको नारीका आभूषण क्यों कहा जाता है?

उत्तर- नारीके पास सबसे मूल्यवान् तथा आदरणीय सम्पत्ति है उसका सतीत्व। सतीत्वकी रक्षा ही उसके जीवनका सर्वोच्च ध्येय है। लज्जाशीलतासे सतीत्व और पातिव्रत्यका पोषण और संरक्षण होता है।

१४८. प्रश्न- क्या पति-पत्नीके शुभाशुभ कर्मोंका परिणाम एक दूसरेपर होता है?

उत्तर- पति-पत्नीमेंसे एकके शुभाशुभ कर्मका परिणाम भी दोनोंपर होता है। हाँ, जो पुरुष या स्त्री भक्ति-ज्ञानके प्रभावसे मुक्त हो गये हों, उनपर कोई दायित्व नहीं रहता। अथवा पति सदाचारी हो और पत्नीमें पापकी वृत्ति हो तथा पतिके समझाने-बुझाने एवं रोकनेपर भी वह पापपथसे न हटती हो, तब उसके पापका फल उस अकेलीको ही भोगना पड़ेगा। इसी प्रकार पत्नीके समझाने-रोकनेपर भी पति यदि उसकी राय न मानकर पापाचरणमें प्रवृत्त रहता है, तब उसके फलका जिम्मेवार भी वह अकेला ही होता है।

१४९. प्रश्न- पत्नीका पतिको परमेश्वररूप माननेका क्या अभिप्राय है?

उत्तर- पतिको परमेश्वररूप माननेका यही अभिप्राय है कि नारी घरमें रहकर नरका निर्माण, संरक्षण और संवर्द्धन करती हुई भगवत्संकल्परूप विश्वकी सेवाके द्वारा भगवान्की सेवा करे। बार-बार वृत्तिको पतिके ब्याजसे परमेश्वरमें लगाती हुई तद्गतचित्त, तद्गतबुद्धि और तदात्मा

होकर अन्तमें परमेश्वरको प्राप्त कर ले।

१५०. प्रश्न- पत्नीके लिये सबसे महत्त्व और सम्मानकी वस्तु क्या है?

उत्तर- उसका पतिके प्रति निश्छल सरल प्रेम, पतिको परमेश्वर मानकर पतिके मनका अनुगमन। इसीका दूसरा नाम 'पातिव्रत्य' है।

१५१. प्रश्न- क्या पत्नीको पतिकी सभी आज्ञाका पालन करना चाहिये?

उत्तर- अपनी हानि हो, अपने नरकमें जानेकी सम्भावना हो, वहाँ तककी आज्ञा भी मानी जा सकती है, परन्तु जिस आज्ञाके पालनसे आज्ञा देनेवालेको नरकमें जाना पड़े--ऐसी अशास्त्रीय आज्ञाको कभी नहीं मानना चाहिये।

१५२. प्रश्न- क्या स्त्रियोंको गुरु बनाने चाहिये?

उत्तर- स्त्रियोंके लिये एकमात्र पति ही परमगति, परमदेवता और परम गुरु माने गये हैं। उन्हें अन्य गुरु करनेकी आवश्यकता नहीं है।

१५३. प्रश्न- क्या स्त्रियोंको किसी संन्यासीका स्पर्श करना चाहिये?

उत्तर- कोई मनुष्य संन्यासीका बाना धारण करके भी स्त्रियोंसे शरीरका स्पर्श कराता है तो वह न केवल स्वधर्मसे भ्रष्ट होता है, अपने संसर्गमें आनेवाले स्त्री-पुरुषोंको भी पापका भागी बनाता है। वे स्त्रियाँ भी अपनेको नरकोंमें ले जा रही हैं। स्वयं परम पवित्र सतीधर्मसे गिरकर दूसरोंके लिये बुरा आदर्श उपस्थित करती हैं।

१५४. प्रश्न- पत्नीका पतिके परिवारवालोंके प्रति क्या कर्त्तव्य है?

उत्तर- सास-श्वसुरकी सेवाका सुअवसर मिला इसे सौभाग्य मानकर उनकी रुचि, उनसे मधुर आदरयुक्त वाणीमें बात करनी चाहिये। हर अवस्थामें उनकी सेवा करनी चाहिये। उनकी कन्याओंको, जो ननद लगती हैं, देवर, देवरानी, जेठानी सबको आदर तथा बढ़िया चीजें प्रसन्नतापूर्वक दी जानी चाहिये।

१५५. प्रश्न- सच्चा मातृभाव क्या है?

उत्तर- माँको चाहिये कि उसके बच्चे सच्चे भगवद्भक्त बनें। भगवान्‌के प्रेमी बनें और अपने जीवनके शुभ कार्योंके द्वारा भगवान्‌की सेवा करते हुए अंतमें भगवत्--कैंकर्यके परमानन्दको प्राप्त कर धन्य हों। यही सच्चा मातृभाव है।

१५६. प्रश्न- क्या गृहस्थाश्रम बेड़ी है?

उत्तर- बेड़ी तो तबतक है, जबतक मोह है।

१५७. प्रश्न- स्त्री जातिको 'अबला' क्यों कहते हैं?

उत्तर- इसलिये कि वह अपने बलका प्रदर्शन नहीं करती, पति-पुत्रोंकी मंगल-कामनासे वह प्रेममयी-स्नेहमयी बनी रहती है।

१५८ प्रश्न- सती होना क्या है?

उत्तर- जबरदस्ती पतिके शवके साथ जल मरनेका नाम ही सती होना नहीं है। अपने मनको मारकर और पतिके चरणोंमें चित्त लगाकर पतिके प्रति परमात्माका भाव करना ही यथार्थ सती होना है। इसीलिये विधवाओंको चाहिये कि मनको जीतकर एकमात्र परमात्माको ही अपना पति मानकर प्रेमपूर्वक उसीका भजन करें--यही सती होना है।

नारी है घरकी साम्राज्ञी, पुरुष बाहरी कार्याधीश।
सेवक-सखा परस्पर दोनों, दोनों ही दोनोंके ईश॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १३२९)

शिक्षा

१५९. प्रश्न- शिक्षाका उद्देश्य क्या है?

उत्तर- आर्य सभ्यताके अनुसार शिक्षाका उद्देश्य है--उसके द्वारा इहलोकमें सर्वांगीण अभ्युदय और परलोकमें मोक्षकी प्राप्ति।

१६०. प्रश्न- वास्तविक शिक्षा क्या है?

उत्तर- वास्तवमें शिक्षा वह है, जो मनुष्यमें उसके स्वधर्मानुकूल कर्त्तव्यको जाग्रत करके उसे उस कर्त्तव्यका पूरा पालन करने योग्य बना दे।

१६१. प्रश्न- शिक्षाका क्या महत्त्व है?

उत्तर- सारा काम होता है सत्-शिक्षासे, पर आजकल हमारे बालकोंको जो शिक्षा दी जाती है उससे तो बिल्कुल ही विपरीत फल हो रहा है।

१६२. प्रश्न- वर्तमान शिक्षाके बारेमें आपका क्या विचार है?

उत्तर- आजकल कॉलेजोंमें पढ़नेवाले अधिकांश विद्यार्थियोंमें न्यूनाधिक रूपसे आपको ये दोष मिलेंगे--१-ईश्वर और धर्ममें अविश्वास, २-संयमका अभाव, ३-ब्रह्मचर्यका अभाव, ४-माता-पिता, गुरुजनोंमें अश्रद्धा, ५-प्राचीनताके प्रति विद्वेष, ६-विलासिता और फिजूलखर्ची।

१६३. प्रश्न- आजकल सह-शिक्षा बढ़ रही है। आपकी क्या राय है?

उत्तर- लड़के-लड़कियोंको एक साथ न पढ़ाया जाय। सह-शिक्षा न हो। ऐसे शिक्षालयोंमें बच्चोंको न भेजे।

१६४. प्रश्न- कौन-कौनसे विद्यालयोंमें बच्चोंको नहीं भेजना चाहिये?

उत्तर- जहाँ केवल विदेशी भावोंकी शिक्षा एवं आचार सिखाये जाते हों, उनमें बच्चोंको न भेजें।

१६५. प्रश्न- क्या छात्रालयोंमें बच्चोंको भेजनेमें हानि है?

उत्तर- आजकलके दूर-दूरके छात्राश्रमोंमें बच्चोंको भेजना बहुत हानिकर है। वहाँ अधिकांशमें अनीति, असदाचार, नास्तिकता, खान-पान, विवाह आदिमें विधि-निषेधको न मानने, गुरुजनोंका अनादर करने तथा यथेच्छाचारी बननेकी ही शिक्षा मिलती है।

ब्रह्मचर्य

१६६. प्रश्न- ब्रह्मचर्यकी रक्षाका सरल उपाय क्या है?

उत्तर- सात्त्विक वातावरणमें रहना और इन्द्रिय-संयम रखना।

१६७. प्रश्न- गृहस्थ ब्रह्मचर्यका पालन कैसे करें?

उत्तर- मनुस्मृतिके अनुसार--रजोधर्मके पहले चार दिन बाद देकर उसके बादकी बारह रात्रियोंमें अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, पर्वदिन, श्राद्धादिके दिन टालकर शेष रात्रियोंमें केवल दो बार स्त्री-सहवास करना भी ब्रह्मचर्य ही है।

१६८. प्रश्न- ब्रह्मचर्य पालन न करनेसे क्या हानि है?

उत्तर- इससे मन और शरीर दुर्बल हो जाता है। चेहरा पीला पड़ जाता है। स्मरण-शक्ति चली जाती है, हृदय कमजोर हो जाता है। सारांश यह है कि जीवन क्लेशोंका समुद्र बन जाता है।

१६९. प्रश्न- ब्रह्मचर्यके लिये साधारण जीवनमें क्या ध्यान रखें?

उत्तर- जान-बूझकर कभी किसी स्त्रीकी ओर मत देखिये। स्त्रियोंकी चर्चामें सम्मिलित मत होइये। पवित्र जीवनके लिये भगवान्‌से प्रार्थना कीजिये। सादा भोजन कीजिये।

१७०. प्रश्न- साधनामें ब्रह्मचर्यके पालनपर जोर क्यों दिया जाता है?

उत्तर- शरीरके अन्दर ओज हुए बिना साधनमें पूरी सफलता नहीं मिलती। ओजके लिये ब्रह्मचर्यकी बड़ी आवश्यकता है।

१७१. प्रश्न- क्या केवल ब्रह्मचर्य पालनसे साधक भगवान्‌की ओर तेजीसे बढ़ता है?

उत्तर- जो जितना ही अधिक ब्रह्मचर्यका पालन करेगा वह उतना ही शीघ्र परमार्थके मार्गमें आगे बढ़ सकेगा।

१७२. प्रश्न- जब कामोत्तेजना हो तब क्या करें?

उत्तर- जब कामोत्तेजना हो तो एक गिलास ठंडा जल पी लीजिये। एकान्तमें न रहकर चार आदमियोंके पास आकर सत्‌चर्चा चला दीजिये। जोर-जोरसे नामकीर्तन कीजिये।

ब्रह्मचर्य आठों प्रकारसे नित्य सुरक्षित रहे महान।
'ऊँचे स्तरका जीवन' यह--जिससे प्रसन्न होते भगवान्॥

(पद-रत्नाकर, पद सं० १४९४)

मानव जीवनका लक्ष्य

१७३. प्रश्न- मानव जीवनका मुख्य उद्देश्य क्या हो?

उत्तर- मानव जीवनका एकमात्र उद्देश्य भगवत्प्राप्ति या भगवान्‌के प्रेमकी प्राप्ति है।

१७४. प्रश्न- 'भगवत्प्राप्ति ही मनुष्य जीवनका एकमात्र उद्देश्य है'--इस बातपर विश्वास करनेके लिये क्या करना चाहिये?

उत्तर--महात्मा और संतोंकी वाणी तथा उनकी जीवनीका अध्ययन करना चाहिये।

१७५. प्रश्न- इस उद्देश्यकी पूर्ति कैसे हो?

उत्तर- भगवान्‌की ओरसे हटानेवाले अत्यन्त प्रियसे प्रिय और

आवश्यकसे आवश्यक पदार्थोंमें तुच्छ और त्याज्य बुद्धि, भगवान्‌के पवित्र नामका निरन्तर उच्चारण और भगवत् सेवाके भावसे ही शरीर, मन और वाणीसे क्रिया करना।

१७६. प्रश्न- इस उद्देश्यवालेको किन बातोंका ख्याल रखना चाहिये?

उत्तर- पाँच बातोंका ख्याल रखना चाहिये--

१- पापकर्म (कम-से-कम शरीरसे) न हो।

२- व्यर्थ चर्चा न हो।

३- किसीके साथ बुरा बर्ताव न हो।

४- भगवान्‌के नाम-चिन्तनकी विशेष चेष्टा रहे।

५- भगवत्कृपापर विश्वास हो।

१७७. प्रश्न- जीवनमें सफलता कैसे मिले?

उत्तर- अपने लक्ष्यको कभी न भूलें और सदा उसके अनुकूलका ग्रहण तथा प्रतिकूलका परित्याग करें। यदि हमारा लक्ष्य ठीक रहा और हम उसपर दृढ़तासे आरूढ़ रहें तो लक्ष्यकी प्राप्ति (भगवत्प्राप्ति) निश्चित है।

१७८. प्रश्न- मनुष्यका सबसे अच्छा साथी कौन है?

उत्तर- मनुष्यका सबसे अच्छा साथी है--वह सत्साहित्य, जो उसे सत्स्वरूप भगवान्‌में जोड़ देता है।

१७९. प्रश्न- जीवनमें हानि-लाभ क्या है?

उत्तर- जीवनका जो क्षण बिना भजनके बीत गया वह बड़े नुकसानका काम हो गया। भजन ही परम लाभ है, भजनका अभाव ही परम हानि है।

१८०. प्रश्न- विषय-सुखका भोग करनेवालेकी क्या गति होती है?

उत्तर- जो मनुष्य केवल विषयोंमें सुख खोजता है उसके जीवनका अन्त तीन बातोंमें होता है--अतृप्ति, असफलता और पापसंग्रह।

१८१. प्रश्न- मानव जीवनमें सबसे हानिकर क्या है?

उत्तर- कामिनी, कञ्चन और मान-बड़ाई।

१८२. प्रश्न- अधिकांशतया आजका मनुष्य भगवान्‌से विमुख हो रहा है। इसका प्रधान कारण क्या है?

उत्तर- इसका एक प्रधान कारण भोगसुखकी महत्ता, भोगसुखमें रुचि, प्रवृत्ति और भोगवासना ही है।

१८३. प्रश्न- मनुष्य स्वभावतः पतनकी ओर क्यों जाता है?

उत्तर- मनुष्यकी प्रकृति स्वभावतः अधोगामिनी है, अतएव जैसे जल स्वभावसे ही नीचेकी ओर बढ़ता है, उसी प्रकार प्रकृतिके गुणोंमें स्थित पुरुष भी स्वभावतः पतनकी ओर ही जाता है।

१८४. प्रश्न- मनुष्यका बैरी कौन है?

उत्तर- मनुष्यका बैरी कोई भी नहीं है। उसकी स्वेच्छाविहारिणी इन्द्रियाँ, उसका न जीता हुआ मन और विपरीत निर्णय करनेवाली उसकी बुद्धि ही बैरी है।

१८५. प्रश्न- मानव जीवनमें उन्नति किससे होती है?

उत्तर- सत् अर्थात् सद्‌गुण ही मनुष्यकी उन्नतिका मूल है।

१८६. प्रश्न- मानव जीवनमें पूर्णता कब होती है?

उत्तर- अपनेको पूर्ण मानना ही अपूर्णता है, पूर्णताकी स्थितिमें तो न पूर्णका बोध है न अपूर्णका। वह तो अनिर्वचनीय स्थिति है।

१८७. प्रश्न- मनुष्य अपनी स्थितिसे क्यों गिर जाता है?

उत्तर- विषय चिन्तनसे। पहले विषयका चिन्तन होता है, चिन्तनसे आसक्ति होती है। आसक्तिसे कामना, कामनाकी पूर्तिमें लोभ या कामनापर चोट लगनेपर क्रोध, क्रोधसे मोह, मोहसे स्मृतिनाश, स्मृतिनाशसे बुद्धिनाश और बुद्धिनाशसे आदमी अपनी स्थितिसे गिर जाता है और अपना सर्वनाश कर लेता है।

१८८. प्रश्न- जीवनकी सफलताके लिये क्या करें?

उत्तर- भोगियोंको देखकर कभी मनमें यह वृत्ति नहीं आनी चाहिये--'ये बड़े व्यक्ति हैं, हमें भी ऐसा बनना चाहिये।' इसके विपरीत जो साधना-सम्पन्न हैं, उन्हें देखकर उनके जैसा बननेकी वृत्ति जाग्रत् होनी चाहिये।

१८९. प्रश्न- संसारका दुःख क्या है?

उत्तर- अभावकी अनुभूति।

१९०. प्रश्न- क्या दूसरेके अनिष्टके लिये अनुष्ठान करना चाहिये?

उत्तर- भगवान्‌का भजन करके, यज्ञ करके, दान करके, अनुष्ठान करके किसीका अनिष्ट चाहना--यह उस देवताका एवं अनुष्ठानका अपमान करना है। भगवान् अपने भक्तकी अनिष्टकारी इच्छाको कभी सफल नहीं करते।

१९१. प्रश्न- मानवकी कितनी श्रेणियाँ हैं ?

उत्तर- मानवकी तीन श्रेणियाँ हैं--विषयी, साधक और सिद्ध। विषयी संसारमें रचा-पचा है, साधकका मार्ग उससे अलग है और सिद्धके लिये संसारका अस्तित्व ही नहीं है।

१९२. प्रश्न- मानव जीवनमें भ्रम क्या है ?

उत्तर- चार चीजें जगत्‌के भोगोंके विषयमें हमें दीखती है--सत्ता, रमणीयता, सुख एवं प्रेम। अर्थात् वस्तु है, परम सुन्दर है, सुखदायक है और हमसे प्रेम करनेवाली है। इन चारोंको ही संतोंने भ्रम बतलाया है।

१९३. प्रश्न- मनुष्यका धर्म क्या है ?

उत्तर- मनुष्यका सबसे उत्तम धर्म है--'भगवान्‌में लगे रहना।'

१९४. प्रश्न- जीवनमें शुभ क्या है ?

उत्तर- अपने मनके विकार जिससे शान्त हो, जिससे मनमें पवित्रता आती हो, संयम, त्याग, दूसरेके हितकी भावना, भगवान्‌के भजनकी भावना आती हो वह हमारे लिये शुभ है।

१९५. प्रश्न- जीवनमें अशुभ क्या है ?

उत्तर- जिससे विकारकी भावना, काम-क्रोध, आसक्ति-लोभ आदि बढ़ते हों असंयम आता हो, वह हमारे लिये अशुभ है।

१९६. प्रश्न- मनष्य जीवनमें खतरा क्या है ?

उत्तर- मनुष्य जीवनमें एक बहुत बड़ा खतरा है, जो दूसरे जीवनमें नहीं है। दूसरे जीवनमें कर्मोंका भोग होता है, वहाँ नवीन पापकर्म नहीं होते; परन्तु मनुष्य-जीवनमें नवीन पापकर्म बन सकते हैं और उन्हें भोगना पड़ता है।

१९७. प्रश्न- विष क्या है ?

उत्तर- विषयोंमें विष है--आसक्ति, कर्ममें विष है--कामना,

अपने विचारोंमें विष है--अहंता और सगे-सम्बन्धियोंमें विष है--ममता।

१९८. प्रश्न- इस विषसे बचनेका उपाय क्या है?

उत्तर- **पहले इनके प्रति विष-बुद्धि हो। विष-बुद्धि होनेपर इनका त्याग स्वाभाविक होता है।**

१९९. प्रश्न- इहलौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकारकी उन्नति और सिद्धिके लिये मनुष्यको क्या करना चाहिये?

उत्तर- **श्रीभगवान्‌में सब सिद्धियाँ सब समय मौजूद हैं। अतः मनुष्यको सर्वतोभावसे केवल विज्ञानानन्दघन सम्पूर्ण ऐश्वर्यमय परम सुहृद् भगवान्‌का ही आश्रय ग्रहण करना चाहिये। इससे लोक-परलोकके सभी कार्योंकी सिद्धि सहज ही हो जाती है।**

२००. प्रश्न- किसका जीवन सफल है?

उत्तर- **जिसके जीवनमें त्याग हो, जिसका धन गरीबोंकी सम्पत्ति हो, जिसका बल दीनोंका सम्बल हो, जिसका मन विश्व प्राणिरूप भगवान्‌की सेवामें लगा हो, वही धन्य है। उन्हीका जीवन सफल है।**

२०१. प्रश्न- संसारमें सर्वोत्तम सुखकी प्राप्तिका परम साधन क्या है?

उत्तर- **'संतोष'।**

२०२. प्रश्न- संतोष कब साधन है, कब त्याज्य है?

उत्तर- **सांसारिक भोगोंमें संतोष साधन है और भगवद्भजनमें संतोष विघ्न है।**

२०३. प्रश्न- मनुष्य जीवनकी सबसे मूल्यवान् वस्तु क्या है?

उत्तर- **समय। क्योंकि मृत्यु आनेपर एक क्षणका समय भी माँगे नहीं मिलता।**

२०४. प्रश्न- मानव-धर्म क्या है?

उत्तर- **सर्वभूतहित-वृत्तिका होना ही मानवताकी सूचना है और इसीके विस्तारमें मानवताका विकास है। यही मानव-धर्म है।**

२०५. प्रश्न- भारतीय मानव समाजने अपना चरम लक्ष्य सांसारिक उन्नतिको न मानकर भगवान्‌को क्यों माना?

उत्तर- **भारतके ऋषि-मुनियोंने सुदीर्घ समाधि तथा ध्यानलब्ध**

दृष्टिसे सुखका अनुसंधान किया और उसे पाया एकमात्र नित्य सत्य सनातन पूर्ण भगवान्में या ब्रह्ममें। इसीसे उन्होंने एकमात्र भगवत्प्राप्ति या ब्रह्म-संस्पर्शको ही सुख माना है और उसीकी प्राप्तिके लिये साधनोंकी शिक्षा दी और इसीलिये भारतीय मानव-समाजने अपना लक्ष्य भोग न मानकर भगवान्को माना।

२०६. प्रश्न- जीवनमें अधिकांशतः सुख नहीं मिलता दुःख ही भोगना पड़ता है। आखिर क्यों?

उत्तर- मनुष्य पुण्यका फल सुख चाहता है, पर पुण्य नहीं करना चाहता और पापका फल-दुःख नहीं चाहता, पर पाप नहीं छोड़ना चाहता। इसीलिये सुख नहीं मिलता और दुःख भोगना ही पड़ता है।

२०७. प्रश्न- जब हम कुछ प्राप्त करना चाहते हैं और वह नहीं होता तथा जब उसमें अचानक ऐसी बाधा आ जाय कि मनोरथको नष्ट कर दे तब क्या करें?

उत्तर- तब वहाँ तुम भगवान्की कृपाके दर्शन करो। भगवत्कृपा ही बाधा बनकर आयी है और तुम्हें भारी दुःखसे बचानेके लिये, जिसकी तुम्हें कल्पना भी नहीं है पर वह भलीभाँति जानती है, इसीलिये तुम्हारे इस कार्यको असफल कर देती है।

२०८. प्रश्न- जीवनकी सफलता क्या है?

उत्तर- हमारे हृदयमें सद्गुण आ जायँ, हमारे आचरणमें सदाचार आ जाय, हमारा मुख भगवान्की ओर मुड़ जाय। हमारे जीवनमें दैवी गुण हो जाय और वह भगवद् भजनकी मूर्ति बन जाय।

मानव जीवनका न कभी है लक्ष्य अशुचितम भौतिक भोग।
लक्ष्य एक ही, रहे सुदृढ़ नित प्रभुसे भेद-शून्य संयोग॥

(पद-रत्नाकर, पद सं०१३१६)

समाज-सुधार

२०९. प्रश्न- समाज क्या है?

उत्तर- व्यक्तियोंके समूहका नाम समाज है।

२१०. प्रश्न- समाज-सुधार कैसे हो?

उत्तर- व्यक्तिके सुधारसे ही समाजका सुधार होगा। यदि प्रत्येक व्यक्ति विशुद्ध चरित्र, सात्त्विक-गुणप्रधान, प्रेमपूर्ण-हृदय, परार्थ-त्यागी और संयमी हो जाय तो सारा विश्व स्वयमेव ही ऐसा बन जाय।

२११. प्रश्न- समाजके पतन और उन्नतिका कारण क्या है?

उत्तर- जिस समाजमें अधिकार और धनकी पूजा बढ़ रही है, वह पतनकी ओर जा रहा है। जिस समाजमें त्याग और कर्त्तव्यकी भावना बढ़ रही है, वह समाज उन्नति कर रहा है।

२१२. प्रश्न- समाज-सुधारमें सद् आचरण क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर- आचरणकी शक्ति अपार है। आचरणके 'मौनव्याख्यान'से वह कार्य हो जाता है, जो बड़े-बड़े सुधारक विद्वान् दिन-रात उपदेश देकर, गम्भीर विवेचनात्मक लेख लिखकर तथा अन्य प्रकारकी शिक्षा-सम्बन्धी चेष्टा करके भी नहीं कर पाते। आचरणमें एक ऐसी दिव्य शक्ति है, जो दूसरेको स्वतः कर्त्तव्यकी ओर प्रेरित कर देती है।

२१३. प्रश्न- बाल विवाह एवं वृद्ध विवाहके सम्बन्धमें आपकी क्या राय है?

उत्तर- बाल विवाह, वृद्ध विवाहको सर्वथा रोक देना चाहिये। अधिक-से-अधिक पैंतीस साल तक पुरुषका विवाह निषेध नहीं करना चाहिये।

२१४. प्रश्न- सगोत्र विवाहका निषेध क्यों है?

उत्तर- सगोत्रा स्त्रीसे जो सन्तान उत्पन्न होती है उसे चाण्डालके समान माना गया है। अनजानमें भी सगोत्रासे विवाह हो जाय तो त्यागकर प्रायश्चितके रूपमें चान्द्रायण व्रत रखनेका विधान है।

२१५. प्रश्न- भ्रष्टाचार दूर होनेका कोई स्थूल उपाय बताइये?

उत्तर- जब मनुष्यमें धर्मका भय जगेगा और वह अकेलेमें भी पाप करनेसे डरेगा तब अनुचित काम आप ही बन्द हो जायेंगे।

२१६. प्रश्न- समाजमें लड़ाइयाँ क्यों होती हैं ?

उत्तर- इसलिये कि विषयोंसे सुखकी आशा है। मनमें यह मोह है कि लड़कर मनमाना विषय प्राप्त करेंगे और फिर सुखी हो जायँगे।

२१७. प्रश्न- प्रयासोंके बाद भी समाजमें सुधार नहीं परिलक्षित होनेका क्या कारण है ?

उत्तर- मनुष्यसे यही भूल होती है कि वह दुनियाको तो सुधारना चाहता है, पर स्वयं सुधरना नहीं चाहता।

२१८. प्रश्न- दुष्ट मनुष्यको सुमार्गपर लानेका कोई सुगम उपाय बताइये ?

उत्तर- उसे कुछ कालतक सत्संगका अवसर प्राप्त कराया जाय और उसके साथ उत्तम-से-उत्तम तथा साधु व्यवहार किया जाय विशेष रूपसे। फिर उसके लिये कोई औषध मिल जायगी।

विधवा-विवाह

२१९. प्रश्न- विधवा-विवाह होना चाहिये या नहीं ?

उत्तर- मैं विधवा-विवाहका विरोधी हूँ। यह धर्मशास्त्रके तो विपरीत है ही पर नैतिक दृष्टिसे भी इसमें कोई लाभ नहीं।

२२०. प्रश्न- विधवाके साथ कैसा व्यवहार करें ?

उत्तर- असहाय और अनाथ विधवाओंकी रक्षा करना सबके लिये महान् पुण्य कार्य है। परन्तु शुद्ध नियत और हृदयकी पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है।

२२१. प्रश्न- विधवाके जीवनको सुखी बनानेका मुख्य उपाय क्या है ?

उत्तर- विधवा-जीवनके गौरवका ज्ञान विधवाको कराना, उसको यह हृदयंगम करा देना कि विधवा-जीवन घृणित और दुःखमय नहीं है, बल्कि पवित्र दैवी जीवन है, जिससे भोग-जीवनकी समाप्तिके साथ ही आत्यन्तिक सुख और परमानन्दकी प्राप्ति करानेवाले आध्यात्मिक जीवनका आरम्भ है।

२२२. प्रश्न- विधवा अपना जीवन कैसे व्यतीत करे ?

उत्तर- विधवा स्त्रीको अपने परलोकगत स्वामीका स्मरण करते

हुए अथवा परमेश्वरका स्मरण करते हुए संयम एवं सदाचारपूर्ण जीवन बिताना चाहिये।

२२३. प्रश्न- विधवाके साथ हमारा क्या कर्तव्य है?

उत्तर- हमारा कर्तव्य पहले यह देखना है कि हम स्त्री बनें और हम विधवा हों तथा हमारे साथ कोई बुरा बर्ताव हो तो उस समय हम क्या सोचें?

२२४. प्रश्न- स्त्री विधवा क्यों होती है?

उत्तर- इसका कारण है स्त्रीके पूर्व जन्मका असदाचार।

दहेज

२२५. प्रश्न- क्या दहेज देना-लेना पाप है?

उत्तर- अपनी कन्याको दहेज देना बुरी चीज नहीं है वरन् विवाहका एक आवश्यक अंग है। क्योंकि कन्याको इसी रूपमें कुछ मिलता है। परन्तु हिन्दू समाजमें इस समय जिस प्रकारसे पिताको बाध्य होकर दहेज देना पड़ता है, वह तो पाप है। पहलेसे सौदा तय किया जाता है, मोल-तोल होता है और कन्याके पितासे अधिक-से-अधिक लूटनेकी चेष्टा की जाती है।

२२६. प्रश्न- घरमें लड़केके जन्मपर जितनी खुशी होती है उतनी लड़कीसे नहीं। क्या इसका मूल दहेज प्रथा ही है?

उत्तर- खर्चकी भयानकताके कारण लड़कियोंका विवाह नहीं हो पाता और अच्छे-अच्छे परिवार इसके लिये दुःखी हो रहे हैं। इसीके कारण प्रायः लड़के-लड़कियोंमें जन्मकालसे ही भेद दृष्टि हो जाती है।

२२७. प्रश्न- ऐसी स्थितिमें कन्याके माता-पिता क्या करें?

उत्तर- कन्याके माता-पिता क्या करें, उन्हें तो किसी प्रकार खेत-जमीन, घर-द्वार बन्धक रखकर वरके माता-पिताको राजी करना ही पड़ता है। परंतु वह हृदयका रक्त दिया जाता है, दहेज नहीं।

२२८. प्रश्न- तब ऐसी दहेज प्रथाको दूर करनेके क्या उपाय है?

उत्तर- उसके दूर करनेका उपाय तो यही है कि वर-पक्षवाले दहेज लेना बन्द कर दें। कम-से-कम सयाने लड़कोंको इस त्यागके

लिये तैयार होना चाहिये और प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम अपना विवाह तभी करवायेंगे जब दहेज नहीं लिया जायेगा।

२२९. प्रश्न- कन्या-पक्षवालोंके लिये क्या सलाह है ?

उत्तर- कन्या पक्षके लोगोंसे भी मेरी यह प्रार्थना है कि वे अपनेसे ज्यादा धनी न खोजकर सुयोग्य, गरीब लड़के खोजें और उनसे अपनी कन्याका विवाह करें। समान घरमें जानेसे कन्या ज्यादा सुखी रह सकती है ?

२३०. प्रश्न- यह प्रथा बन्द होनी तो कठिन लगती है, तब समाजका भविष्य क्या होगा ?

उत्तर- जबतक देशमें तिलक या ठहरौनीकी प्रथा जारी है, जबतक लड़केकी अमुक कीमत दहेजके रूपमें माँगी जाती है और जबतक धनके अभावसे कन्याके माता-पिता अपने प्राणोंकी पुतली कन्याके लिये सुयोग्य वर नहीं पाते, तब तक समाजमें पापकी वृद्धि ही होती जायगी।

व्यर्थ खर्च

२३१. प्रश्न- व्यर्थ खर्च आप किसे कहते हैं ?

उत्तर- हमने अपनी आवश्यकताएँ बहुत बढ़ा ली हैं। यदि हम ध्यान देकर देखें तो व्यक्तिगत और समाजगत ऐसे हजारों अवसर हैं, जिनमें हम बहुत धन खर्च किया करते हैं परंतु वहाँ बिना खर्च किये ही काम मजेमें चल सकता है, ऐसे अवसरोंपर खर्च करनेकी आवश्यकता हमने उत्पन्न कर ली है; वस्तुतः है नहीं। समाजमें विवाह-शादी, कर्णछेदन, जनेऊ, मरण आदिपर इतनी बुरी तरह खर्च किया जाता है कि जिसका दुःख पीढ़ियोंतक भोगना पड़ता है।

२३२. प्रश्न- खर्च तो पहले भी होता था। अब हमारे पास धन है तो हम क्यों न खर्च करें ?

उत्तर- पहले जो खर्च किया जाता था, वह प्रायः ऐसी चीजोंमें खर्च होता था जो चीजें बुरे समयपर काम आती थी और उनकी लागतसे कुछ ही कम कीमत, चाहे जब बेचकर वसूल की जा सकती थी। परंतु